डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

विषय - संस्कृत, बी॰ ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा) Date 16/05/20
प्रथमवर्ष, द्वितीय पत्र

काव्य इतिहास और व्याकरण

नाटक :-

संस्कृत साहित्य में नाट्य का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। नाट्य ही काव्य का वह अंग है जो दृश्यकाव्य के अन्तर्गत आता है। नाट्यशास्त्र का महत्त्व बताते हुए भरतमुनि कहते हैं कि विश्व का ऐसा कोई ज्ञान, शिल्प, विद्या, कला, योग (प्रयोग) और कर्म नहीं है, जो इसमें न आता हो।

न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।
नासौ योगो न तत्कर्म नाट्येऽस्मिन् यन्न दृश्यते॥
(नाट्यशा॰ 1-116)

दृश्यकाव्य का ही सामान्य नाम नाट्य है और चूंकि अभिनेता अपने ऊपर अभिनीत पात्रों का आरोप कर लेते हैं - 'रूपारोपात्तु रूपकम्'। अतः नाट्य का ही दूसरा नाम रूपक भी है। रूपक या नाट्य के दस भेद हैं -

नाटकमथ प्रकरणं भाणव्यायोगसमवकारडिमाः।
ईहामृगाङ्कवीथ्यः प्रहसनमिति रूपकाणि दश॥
(साहि॰दर्पण 6.3)

उनमें सर्वप्रथम नाटक है अतः नाट्य या रूपक को ही जनसाधारण नाटक के नाम से पुकार लेता है। इस प्रकार नाटक, रूपक या नाट्य का पर्याय सा ही हो गया है।

नाट्य में दर्शक को अपनी कल्पना दौड़ाने की आवश्यकता नहीं होती। परदा उठते

Scanned with CamScanner

ही रसास्वादन प्रारम्भ हो जाता है। यही कारण है कि जनसाधारण श्रव्यकाव्य की अपेक्षा नाट्य से ही अधिक प्रभावित होता है। कालिदास ने भी नाट्य को भिन्न रुचि वाले लोगों के लिए एक सामान्य मनोरंजन का साधन बतलाया है-

'नाट्यं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम्'।

यही एक ऐसा साधन है जो दुःखी, आर्त तथा क्लान्त लोगों का मनोरंजन करता है।

दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्।
विश्रान्तिजननं काले नाट्यमेतन्मया कृतम्॥
(नाट्यशास्त्र 1.114)

इन सब कारणों से ही नाट्य को कवित्व की चरम सीमा 'नाटकान्तं कवित्वम्' 'काव्येषु नाटकं रम्यम्' तथा काव्यों में सर्वाधिक रमणीय माना गया है।

भारतीय परम्परा के अनुसार नाट्य वेद की उत्पत्ति ब्रह्मा ने की तथा उसका पृथ्वी पर प्रचार भरतमुनि ने किया। ~~भरत~~ भरतमुनि ने अपने नाट्य शास्त्र के प्रारम्भ लिखा है कि त्रेतायुग में देवता ब्रह्मा के पास गये उनसे मनोरंजन का कोई साधन प्रदान करने की विनती की। तब ब्रह्मा जी ने ऋग्वेद से पाठ्य, सामवेद से संगीत, यजुर्वेद से अभिनय तथा अथर्ववेद से रस के तत्त्व लेकर पाँचवे वेद नाट्यवेद की रचना करदी।

जग्राह पाठ्यमृग्वेदात् सामभ्यो गीतमेव च।
यजुर्वेदादभिनयान् रसानथर्वणादपि। (नाट्यशा० 1.17)

तथा तस्मात्सृजापरं वेदं पञ्चमं सार्ववार्णिकम् (नाट्यशा० 1.12)

Scanned with CamScanner